स्वास्थ्य में एक पहलः जन स्वास्थ्य सहयोग

बाबा मायाराम

अंग्रेजी के टी आकार के बरामदे में लोगों की भीड़ जमा है। सुबह के आठ बजे हैं। इन लोगों में कई तो पिछली रात ही यहां पहुंच गए थे। जंगल के दूर-दराज़ के गांवों के ये लोग यहां इलाज कराने के लिए आए हैं। डॉक्टर को दिखाने के लिए यहां लाइन में लगना पड़ता है। नंबर लगाने के लिए बरामदे की पट्टी पर अपना गमछा या रस्सी बांध देते हैं। सबको डॉक्टर का इंतज़ार है। यह आम दृश्य है छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ज़िले के एक छोटे-से कस्बे गनियारी का। गनियारी बिलासपुर से दक्षिण में 20 किलोमीटर दूर स्थित है।

अब डॉक्टरों की गाड़ी आ गई है और बिना देर किए प्रारंभ हो जाता है मरीज़ों को देखने का सिलसिला। यहां सबसे पहले मरीज़ों की बात सुनी जाती है फिर जांच की जाती है और बाद में उपचार। डॉक्टर पूछते हैं - 'क्या बीमारी है?' जबाव आता है - 'खांसी।' 'कब से है', 'बहुत दिनों से।' 'क्या इलाज कराया?' 'दुकान से दवा लेकर खाता रहा।' बाद में मुझे डॉक्टर ने बताया कि इस मरीज़ को टी. बी. है। मगर इसे लापरवाही कहना भी जल्दबाज़ी होगी क्योंकि इसकी कई वजहें हैं। लोगों की अपनी कई समस्याएं हैं। वे गरीबी, बेरोज़गारी, महंगाई, कुपोषण जैसी कई समस्याओं से जूझ रहे हैं।

वे कहते हैं, "इलाज के लिए पैसे नहीं हैं, इलाज कहां कराएं? प्राइवेट डॉक्टर के पास चले भी जाएं तो महंगी दवाइयां कैसे खरीदें? सरकारी अस्पताल में कोई सुनने वाला नहीं है। यह किसी एक मरीज़ का हाल नहीं है बल्कि ज़्यादातर लोगों की कहानी है। वे इसी हाल में जीने को मजबूर हैं।" ऐसी परिस्थितियों में छत्तीसगढ़ के एक छोटे कस्बे में जन स्वास्थ्य सहयोग नामक गैर सरकारी संस्था की पहल के बारे में जानना प्रेरणादायी है।

इस गैर सरकारी जन स्वास्थ्य सहयोग केन्द्र की स्थापना वर्ष 1999 में हुई थी। इसकी शुरुआत देश की मौजूदा स्वास्थ्य सेवाओं की हालत से चिंतित दिल्ली के कुछ डॉक्टरों ने की थी। इससे पहले उन्होंने देश भर में घूमकर ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा किया जहां वे अपनी सेवाएं दे सकें। और अंततः देश के गरीब इलाकों में से एक छत्तीसगढ़ के एक छोटे कस्बे में उन्होंने काम प्रारंभ किया। देश के सबसे चोटी के अस्पताल ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ (एम्स) से निकले युवा डॉक्टरों ने यहां गरीबों के लिए स्वास्थ्य का अनूठा अस्पताल बनाया है। उनका यह काम पिछले करीब 10 सालों से चल रहा है। अपने पेशे में गहरी निष्ठा वाले ये चिकित्सक स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई नए प्रयोग कर रहे हैं।

यहां कम कीमत में बेहतर इलाज किया जाता है। इस केन्द्र का उद्देश्य है कि ग्रामीण समुदाय को सशक्त कर बीमारियों की रोकथाम और इलाज करना। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों की स्वास्थ्य समस्याओं का अध्ययन करना, उनकी पहचान करना और कम कीमत में उचित इलाज करना। इस केन्द्र की उपयोगिया का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि वर्ष 2000 में बिना किसी औपचारिकता के बाह्य रोगी विभाग (ओपीडी) शुरू हुआ था और मात्र 3 माह के अंदर यहां प्रतिदिन आने वाले मरीज़ों की संख्या 250 तक पहुंच गई।

यहां सिर्फ गनियारी स्वास्थ्य केन्द्र में ही इलाज नहीं किया जाता बल्कि कोटा-लोरमी के 50 से भी अधिक गांवों में सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के ज़रिए छोटी-मोटी बीमारियों को काबू में करने की कोशिश भी जारी है। इस ग्रामीण सामुदायिक कार्यक्रम के तहत गांव की 70 महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया है। इनमें से 80 प्रतिशत महिलाएं अनपढ़ हैं। इस कार्यक्रम के प्रमुख डॉ. योगेश जैन कहते हैं कि अगर हम स्कूली शिक्षा को इसका आधार बनाते हैं तो गांव की अधिकांश महिलाएं इस दायरे से बाहर हो जाएंगी। गांव में पढ़ी-लिखी महिलाएं तो सम्पन्न घरों से होती हैं। उन्हें गांव के कामों में कोई खास दिलचस्पी नहीं होती। उन्होंने बताया कि "हमारे स्वास्थ्य कार्यक्रम को

अच्छे से चलाने में अनपढ़ लेकिन अनुभवी महिलाओं का बहुत योगदान है।" सामुदायिक कार्यक्रम का एक और महत्त्वपूर्ण हिस्सा तीन उपकेन्द्र हैं, जो सेमरिया, शिवतराई और बम्हनी में सप्ताह में एक बार चलाए जा रहे हैं। बम्हनी में माह में दो बार रात्रि क्लीनिक भी चलाया जाता है। ज़ोर केवल इलाज पर नहीं बल्कि इस बात पर है कि लोग बीमार ही न पड़ें।

6 माह से 3 साल तक के बच्चों के लिए फुलवारी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह झूलाघर की तरह है जिसमें बच्चों को खाना भी खिलाया जाता है। इसके अलावा, दाई प्रशिक्षण, गर्भवती महिलाओं की जांच के लिए शिविर लगाए जाते हैं।

मच्छर काटने से मलेरिया होता है यह सब जानते हैं लेकिन मच्छर न पनपें, शायद ही कोई इसके लिए प्रयास करता हो। यहां मच्छरों को पनपने से रोकने के लिए हर स्तर पर प्रयास किया जाता है। गांव में हैंडपंप के पास डबरों या गड्ढों को पाटा जाता है, खेतों के डबरों को समतल किया जाता है, मच्छरों के लार्वा को खाने के लिए गैम्बूसिया मछली को गांव के आसपास के डबरों में छोड़ा जाता है, स्कूली बच्चों को मलेरिया मच्छरों की पहचान करवाई जाती है ताकि वे कार्यकर्ताओं को बता सकें और उन्हें खत्म करने के लिए कोई उपाय किया जा सके। इसके अलावा, डबरों में जला हुआ ऑइल या मिट्टी का तेल भी डाला जाता है। गांवों में मलेरिया रोकने के लिए किशोर-किशोरियों की समितियां बनी हैं। यानी न मलेरिया मच्छर होंगे और न होगा मलेरिया।

मलेरिया व अन्य बीमारियों से बचाव के लिए स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए गांव-गांव में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। जंगल के गांवों में नाटक देखने के लिए बड़ी भीड़ उमड़ती है। इस मौके पर मच्छरदानी और मच्छर से बचने के लिए मगसाझार तेल का प्रचार किया जाता है।

गनियारी में जन स्वास्थ्य सहयोग के प्रमुख केंद्र में 15 बिस्तर का अस्पताल है, ऑपरेशन थियेटर है। यहां 12 पूर्णकालिक डॉक्टर हैं। यहां के जांच कक्ष में सभी तरह की जांच की जाती है। 80 प्रशिक्षित कर्मचारियों का स्टॉफ है। दूर-दराज़ के और गंभीर मरीज़ों के लिए एम्बुलेंस की सुविधा उपलब्ध है। यहां करीब 11 सौ गांवों के लोग इलाज कराने आते हैं। यहां स्वैच्छिक संस्थाओं और संगठनों से जुड़े स्वास्थ्य कर्मियों को भी प्रशिक्षित किया जाता है।

इस स्वास्थ्य कार्यक्रम का एक मुख्य हिस्सा है उपयुक्त टेक्नॉलॉजी का विकास। इसके तहत स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए सरल-सहज तकनीक से ऐसे यंत्र तैयार किए जा रहे हैं जो बीमारी की जांच और रोकथाम में मददगार साबित हो। यहां ऐसा थर्मामीटर तैयार किया गया है जिसे इस्तेमाल करने के लिए पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी नहीं है।

इसी प्रकार, ब्लड प्रेशर चैक करने की मशीन विकसित की गई है। पानी जांच करने की ऐसी विधि ईजाद की गई है जिससे कोई भी व्यक्ति पानी की जांच कर सकता है और बिजली या साइकिल डायनेमो का इस्तेमाल करके दूषित पानी से साफ पानी प्राप्त कर सकता है। ओ.आर.एस. पैकेट, प्रसूति किट, बच्चों के लिए पोषण आहार तैयार किए जाते हैं। यहां साबुन बनाया जाता है और आयुर्वेदिक दवाइयां भी तैयार की जाती हैं। इसके अतिरिक्त पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए पशु स्वास्थ्य कार्यक्रम भी चलाया जा रहा है।

अब तक 25 गांवों में 25 महिला कार्यकर्ता दर्जन भर से ज़्यादा बीमारियों का इलाज करने में सक्षम हो गई हैं। खेती में मेडागास्कर पद्धति से धान की पैदावार बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं। जन स्वास्थ्य सहयोग की शुरुआत से जुड़े डॉक्टर अनुराग भार्गव का कहना है कि उन्होंने अपने पेशे के दौरान अब तक दुख-दर्द से रोते इतने लोग पहले कभी नहीं देखे थे। सामुदायिक कार्यक्रम के प्रमुख डॉ. योगेश जैन कहते हैं, "हमारे काम की सीमा है, सरकार ही इस काम को बेहतर ढंग से कर सकती है। लोगों को पीने का साफ पानी भी उपलब्ध नहीं है।"

बहरहाल, यह कहा जा सकता है कि यह प्रयोग अंधेरे में एक उम्मीद बंधाता है जो सराहनीय के साथ-साथ अनुकरणीय भी है। ***(स्रोत फीचर्स)***